मधुमक्खी पालन का महत्व एवं लाभ

मधुमक्खी पालन का नाम आते ही जो वस्तु सर्वप्रथम ध्यान में आती है वह है मधु या शहद। मधु मानव द्वारा चखा सबसे पहला व सर्वोत्तम मीठा पदार्थ है। यही एक ऐसा पदार्थ है जिसका सेवन बच्चे से लेकर वृद्ध तक कर सकते हैं। मधुमक्खियों से प्राप्त होने वाले शहद एवं मोम की महत्ता का वर्णन सभी सभ्यताओं और ग्रंथों में भोजन एवं औषधि के रूप में बताया गया है। भारतवर्ष की आयुर्वेद पद्धति में शहद का योगवाही के रूप में विशेष स्थान है। शहद का प्रयोग सभी त्योहारों एवं मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक आवश्यक बताया गया है। मधु न केवल सम्पूर्ण भोजन है बल्कि एक उत्कृष्ट औषधि भी है।

मधुमक्खियों की आदत को जानकर तथा उनकी आवश्यकताओं को समझकर समयानुसार पूरी करना तथा कम से कम कष्ट पहुंचाकर, अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने को **मधुमक्खी/मौनपालन** कहते हैं। मौनपालन भी एक विज्ञान व कला है। इसको एक सहव्यवसाय या पूर्ण रोजगार के तौर पर शुरू कर सकते हैं।

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहां की 70 प्रतिशत जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि है। जनसंख्या के बढ़ने एवं कृषि योग्य भूमि के छोटे-2 भागों में बंट जाने से किसानों की आय में कमी हो गई है। इसलिए अपनी आय बढ़ाने के लिए किसानों व ग्रामीणों को कृषि पर आधारित अन्य धंधे अपनाना आवश्यक हो गया है और मधुमक्खी पालन ऐसा ही एक लाभदायक व्यवसाय है। यह हमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में लाभ पहुंचाता है।

- प्रत्यक्ष रूप में मधुमक्खियों से अनेक गुणकारी पदार्थ जैसे कि मधु, मोम, मधुमक्खी गोंद, रॉयल जैली, पराग एंव मौनविष प्राप्त होते हैं।
- अप्रत्यक्ष रूप में मधुमक्खियों के फूलों पर आवागमन से परपरागण होता है,जिसके फलस्वरुप अनेक फसलों की पैदावार तथा गुणवत्ता में बढ़ोतरी होती है।

कृषि में कीटनाशक, खरपतवारनाशी आदि दवाओं के अत्यधिक प्रयोग से बहुत सारे मित्र कीटों की संख्या बेहद कम हो गई है। मित्र कीट फसलों में शत्रु कीटों की संख्या को नियंत्रण करने तथा परपरागण में मदद करते हैं। इनकी कमी से फसलों की पैदावार अत्यधिक प्रयास करने के बावजूद भी स्थिर सी हो गई है। इस समस्या के समाधान के लिए भी मधुमक्खी पालन की भूमिका अत्यधिक उपयोगी है। मधुमक्खियां एक भरोसेमंद परागणकर्ता हैं, क्योंकि इनमें एक अच्छे और सफल परागणकर्ता के सभी गुण हैं। इसके अलावा मधुमक्खियों को आवश्यकतानुसार परागण की जाने वाली फसलों पर ले जाया जा सकता है।

1. मधुमक्खी पालन के लाभ:

क. व्यवसाय की दृष्टि से

- सरल तकनीक, गरीबी दूर करने व गांव के उत्थान के लिए उपयुक्त व्यवसाय है।
- गरीब, भूमिहीन व छोटे किसानों, बेरोजगारों व ग्रामीण युवकों के लिए आजीविका का अच्छा साधन है।
- शारीरिक शक्ति कम लगने के कारण, महिलाएं भी इस व्यवसाय को आसानी से कर सकती हैं।
- मधुमक्खी पालन में प्रयुक्त होने वाले औजारों के निर्माण से अन्य ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा मिलता है।
- पढ़े लिखे बेरोजगार युवकों व व्यापारियों के लिए विदेशी मुद्रा कमाने का अच्छा साधन है।

- शहद के अलावा मधुमक्खी मोम, मधुमक्खी विष, मधुमक्खी गोंद, राज अवलेह व रानी मधुमक्खियां पैदा करके भी धन कमाया जा सकता है।
- मधु व अन्य मौन पदार्थों का प्रसंस्करण, डिब्बा-बंदी व बिक्री एक अच्छा व्यवसाय है। मधु का बेकरी, कन्फेक्शनरी, पेय-पदार्थों आदि में प्रयोग इस व्यवसाय के विकास को नई सीमाएं प्रदान करता है।

ख. आर्थिक दृष्टि से

- कम लागत में आमदनी ज्यादा।
- एक फायदेमन्द धंधा तथा नियमित आमदनी वाला उद्योग है।
- अपना व्यवसाय चलाने के लिए सरकार तथा बैंकों से अनेक ऋण सुविधांए उपलब्ध हैं।
- परपरागण द्वारा खेती की पैदावार बढ़ने से किसानों व देश की आर्थिक हालत में सुधार की गुंजाइश है।

ग. खेती की दृष्टि से

- खेती के साथ कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है।
- तिलहनी मख्यतः राया व सरसों की फसलों में यह कम से कम 25 से 35 प्रतिश्त की वृद्धि करती हैं।
- अनाज वाली फसलों (गेहूँ, धान, जवार आदि) को छोड़ बाकी सभी स्वंयपरागित फसलों में भी मधुमक्खी परागण से पैदावार में लाभ मिलता है।
- बागवानी व सब्जियों के लिए तो मधुमक्खियां अति आवश्यक हैं। सेब, नाशपती, आडू, अलूचा, सट्राबैरी, लीची, खुमानी, आदि फलों व कद्दू जाति की सब्जियों, बरसीम, लूसर्न आदि फसलें तो ऐसी हैं जिनमें मधुमक्खी परागण के अभाव में कोई फल ही नहीं लगता। कई अन्य फसलें जैसे अरहर, बेलवाली सब्जियां, प्याज, गोभी, गाजर, मूली की बीज वाली फसल, अमरूद, नींबू आदि में मधुमक्खी द्वारा परपरागण से पैदावार बढ़ती है।
- कम लागत में हाइब्रिड बीज पैदा करने में सहायक है।
- मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जिससे प्राकृतिक वास को बिना हानि पहुँचाए आमदनी हो सकती है।
- मधुमक्खियां पौधों की विभिन्न प्रजातियों के संरक्षण में सहायक हैं क्योंकि अगर इन पौधों में परागण क्रिया न हो तो उनकी प्रजन्न क्रिया पूर्ण नहीं होने की अवस्था में वो धीरे-धीरे लुप्त हो सकते हैं।

घ.भोजन व स्वास्थ्य की दृष्टि से

- मधु बच्चों के लिए कुछ हद तक सम्पूर्ण भोजन का काम करता है।
- शहद में अन्य पदार्थों जैसे मछली, सेब, दूध, अण्डा व खुम्ब आदि से अधिक शक्ति पैदा करने की क्षमता है
- शहद के अन्दर अंगूरी एवं फल शक्कर बहुतायत में होती है जो मानव शरीर के अन्दर जल्दी पचाई जा सकती है ।
- शहद में खनिज लवण, विटामिन, एन्जाइम आदि पर्याप्त मात्रा में होते हैं जो शरीर के लिए बहुत लाभदायक हैं।
- शहद में पाचन शक्ति बढ़ाने वाले पदार्थ होने की वजह से इसका सेवन स्वास्थ्य को ठीक रखता है।
- शहद के प्रयोग से शरीर के अन्दर कई हानिकारक जीवाणु तथा विषाणु की बढ़वार रूक जाती है।
- शहद कई प्रकार की बीमारियों के उपचार में काम आता है। शहद को आयुर्वेदिक औषधियों में भी प्रयोग में लाया जाता है।

2. हरियाणा में मधुमक्खी पालन की संभावनाएं:

हरियाणा प्रमुखतः कृषि आधारित प्रदेश है जहां की 86 प्रतिशत भूमि पर खेती होती है। अच्छी जलवायु, भूमि व पानी की उपलब्धता व विविध प्रकार के फसल-चक्र के परिणाम स्वरूप हरियाणा फसल उत्पादन व उत्पादकता में श्रेष्ठ है व राष्ट्र को खाद्यान्न प्रदान करने वाला दूसरा महत्वपूर्ण राज्य है। राज्य के विभिन्न जिलों में ऐसे लम्बे व लगातार भू-भाग हैं जहां सरसों, सफेदा, सूरजमुखी, बरसीम, कपास, बाजरा, अरहर, खैर, फल व सब्जियां, आदि फसलें उगाई जाती हैं जो मधुमक्खियों को प्रचुर मात्रा में लगभग 9 माह तक भोजन उपलब्ध करवाती हैं। अतः हरियाणा मधुमक्खी पालन के हिसाब से सर्वोत्तम प्रान्त है। इसके उत्तर पूर्वी जिलों (करनाल, यमुनानगर, कुरूक्षेत्र, अम्बाला) में यह व्यवसाय पूर्णतया विकसित है जहां प्रदेश के लगभग 80 प्रतिशत मौनपालक हैं। इसके अतिरिक्त कैथल, सोनीपत, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, भिवानी, सिरसा व फतेहबाद जिलों में भी यह व्यवसाय विकासशील है व इसके और विकसित होने की प्रबल संभावनाएं हैं। छोटे व सीमांत किसान व भूमिहीन व बेरोजगार युवक मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पित व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। इसके अतिरिक्त लगभग 1,13,000 हैक्टेयर भूमि पर फल व सब्जियां उगाई जाती हैं जिनके परपरागण हेतु भी मधुमक्खियां जरूरी हैं। अतः हमारे प्रदेश में मौन पालन की अपरिमित संभावनाएं मौजूद हैं।

हरियाणा की जलवायु व फसल-चक्र के कारण एपिस मैलिफेरा मधुमक्खी कि आज हरियाणा में लगभग सवा तीन लाख कालोनियां हैं।